एकल भारत लोक शिक्षा परिषद्
(एकल अभियान ट्रस्ट से संबंधित)
विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक शिक्षा संगठन

एकल संदेश

महिला समिति

जन्माष्टमी उत्सव
29 अगस्त 2021

आप सभी को तीज, स्वतंत्रता दिवस और रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनायें

अप्रैल – जून 2021 | त्रैमासिक | पंचम संस्करण

EBLSP की महिलाओं द्वारा किया गया कार्य

शिक्षा को छूती हुई एकल की योजनायें–

योग केंद्र– शिक्षा एवं संस्कार के साथ–साथ योग शक्ति केंद्र के रूप में भी स्थापित हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के स्वास्थ्य को महत्त्व देते हुए महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा जगह–जगह योग केंद्र खोले जा रहे हैं।

स्वस्थ भारत– शिक्षा के साथ–साथ स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक करने का भी कार्य किया जा रहा है।

प्राणवायु – अर्थात प्रत्येक दिन प्राणायाम, व्यायाम करना एवं आसन करना

टीकाकरण – एकल अभियान द्वारा 1 से 4 लाख गाँव में टीकाकरण कराया गया तथा लोगों को जागरूक भी किया गया।

प्रशिक्षण – ग्रामीण महिलाओं को साफ–सफाई, प्राथमिक उपचार हेतु प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

प्रतिरोधक क्षमता – काढ़ा, गरम पानी नियमित रूप से पीना चाहिए और पौष्टिक भोजन भी करना चाहिए ताकि प्रतिरोधक क्षमता मजबूत रहे।

जागृत भारत –

मनोबल – प्रतिदिन पूरे परिवार के साथ बैठकर पांच बार हनुमान चालीसा का पाठ करने से मनोबल बढ़ता है और बाधाएं भी दूर होती हैं।

पर्यावरण – पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने के लिए तुलसी का पौधा लगाना एवं यज्ञ संस्कृति का पालन करना चाहिए। इससे हमारे आस पास का वातावरण शुद्ध रहता है और हमें विभिन्न रोगों से मुक्ति भी मिलती है

ग्रामोत्थान –

सिलाई केंद्र – महिला सशक्तिकरण के लिए गांवों में सिलाई केंद्र खोलकर उन्हें प्रशिक्षण देने का कार्य किया जा रहा है। जिससे महिलाएं स्वावलंबी भी बन रही हैं।

मास्क वितरण – महिला समिति द्वारा ग्रामीण परिवारों को कोरोना से सुरक्षित रखने के लिए मास्क का वितरण किया गया। और मास्क का नियमित प्रयोग करना एवं समय समय पर हाथ धोते रहना एवं सोशल डिस्टेंसिंग बनाये रखने के लिए जागरूक भी किया गया।

कविताएँ- EBLSP बहनों द्वारा स्वरचित

श्रीमती उमा जी

सदस्य महिला समिति,
कानपुर

कोरोना ने मानव जाति को हिला दिया
रिश्ते–नाते, मिलना–जुलना सब कुछ भुला दिया
घर में बंद, अनहोनी से
आशंकित, TV की ख़बरों से पस्त
कोरोना से हुई मौत के आंकड़ों से सब थे त्रस्त
कोरोना की भयावह तस्वीर ने सबको डरा दिया
पर इस कोरोना ने दुनिया को बहुत कुछ नया भी दिखा दिया
आपात स्थिति में सबको साथ रहना सिखा दिया
कम में भी मिल–जुलकर गुज़र करना सिखा दिया
कोरोना काल में सब कुछ बुरा ही नहीं था
मानवता का एक उजला रूप भी मिला था
रात दिन सेवाव्रती डॉक्टर व नर्स थे
भोजन कराने वाले अनेक संस्थान थे
बस स्टैंड, ट्रेन में, शहर के मुहानों पर
आम लोगों के दल सेवा में खड़े थे। साधारण लोगों के शौर्य की कहानियाँ थीं।
अपने गम को भूलकर सेवा की भावना थी
जिसके पास जो था वह उसने दिया
मनुष्यता की भावना का परिचय दिया
पुलिस दल, अस्पताल कर्मी और सफाई कर्मी
डॉक्टर, नर्स, एम्बुलेंस कर्मी
सबने कोरोना से लड़ कर दिखाया
कोरोना वॉरियर्स का ओहदा पाया उनके जज़्बे का परचम लहराया
हम सबने आदर में सिर झुकाया
वैक्सीन की ताक़त से फिर उठे हम अब
कोरोना को मात देकर ही दम लेंगे हम
अब कोरोना को मात देकर ही दम लेंगे हम

श्रीमती अनू गुप्ता जी

कार्यकारी प्रधान, महिला समिति,
पश्चिमी दिल्ली

खुद को आज़ाद करने का प्रयास,
मै हूँ, चाहे जैसी भी हूँ
खुद से ही खुश हूँ, चाहे कैसी भी हूँ
न मैं अति सुंदरी न छरहरी,
न ही नायिकाओं सी काया है मेरी
पर खुद पर ही नाज़ है
आत्मविश्वास और सबल ही छाया है
क्या करूँ क्या नहीं,
अब नहीं करनी किसी की परवाह
अब तो लगता है वही करूँ,
जो दिल में दबा के रखी थी चाह
बच्चें उड़ चुके या उड़ने वाले हैं,
घोंसलों से नई दिशाओं में.
हम भी चुनेंगे अब अपने पसंद की
जमीं और आसमां नई आशाओं से.
अब अपने घोंसले को ही नहीं
खुद को भी सजाना है.
बहुत मनाया सबको
अब खुद को भी मनाना है.
सूख चुकी उम्मीदों को फिर से सींचना है
रूठी हुई ख्वाहिशों को गले लगा भींचना है
जिऊंगी जिंदगी को अब नई उमंग में
लिए अपनी तमन्नाओं को संग में
थाम हाथ जुगनुओं को, फिर से खिलखिलाऊंगी
नए सफ़र को नई उम्मीदों की रौशनी से जगमगाऊंगी
फिर से बचपन के करीब हूँ
लिखूंगी अपनी जिंदगी
मैं अब खुद ही अपना नसीब हूँ

श्रीमती मधुबाला जी

सदस्य, उत्तरी दिल्ली

नारी की महिमा

जमाने से नारी को मैंने अलग–अलग रूप में देखा.
दादी मम्मी नानी भाभी चाची सभी को हर रिश्ते में देखा...
एक जैसी नहीं हो कर भी एक जैसी लगती हैं.
दया ममता सहनशीलता की तिजोरी होती है....
उनकी जड़े बचपन से परिवार से जुड़ी होती हैं.
सारी कहानियां भी शुरू और खत्म यही होती हैं
बिंदी चूड़ी सिंदूर ही उसकी पहचान नहीं है.
स्वाबलंबी आत्मनिर्भरता संस्कार पहचान यही है....
पक्षी की भांति जब से उड़ना सीख लिया है.
बंधन तोड़ रिश्तों का दायरा बढ़ाना सीख लिया है.....
आज उसकी प्रतिभा का रंग ऐसा निखर आया है.
बुलंदियों के शिखर पर अपना नाम लिखवाया है....
समाज को अगर ऊंचाइयों पर ले जाना है.
तो नारी के साथ नर को हाथ बढ़ाना है....
वह घर परिवार रिश्ते संभालने की कला जानती है.
देश आगे कैसे विकसित होगा बखूबी जानती है....

श्रीमती वंदना मिंडा जी

प्रधान, महिला समिति
दक्षिणी दिल्ली

जिंदगी इतनी खुबसूरत है, लोगों ने इसे बोझिल बना दिया
प्रकृति के इतने खुबसूरत उपहारों को हमने अनदेखा बना दिया
वही मिट्टी, जल, वायु, सूर्य किरणों की कद्र नहीं की,
वे ही जीवन में दुर्लभ हुए
जिस वायु को हमने गँवा दिया, उसी ऑक्सीजन को तरसते हैं
जंगल काटा ऊँचे इमारतों के लिए, सूर्य किरणों के लिए तरसते हैं
स्वच्छ पानी की कद्र नहीं की, वही बोतल वाला पानी पीते हैं
मिट्टी का मोल न समझा, उसी मिट्टी में जा कर मिलते हैं
आज भी वक्त रहते, अगर हम समझ गए तो वक्त हमारा है, वरना हम वक्त के हैं।

कमला गुप्ता जी

प्रधान महिला समिति,
जम्मू

छोटी सी है ज़िन्दगी
हर बात में खुश रहो...
जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज़ में खुश रहो...
कोई रूठा हो आपसे,
उसके अंदाज़ में खुश रहो...
जो लौट के नहीं आने वाले, उनकी याद में खुश रहो...
कल किसने देखा है, अपने आज में खुश रहो..

श्रीमती सुनीता सरीन जी
उपप्रधान, महिला समिति, जम्मू

फूल सूरत खिला करे कोई
खुशबूओं में बसा करे कोई
है सितम की सियाह रात मगर
ख्वाब दिल में बुना करे कोई
नेकियां फैल जाए हर जगह, यह अदा करे कोई
दोस्त बन कर भी जख्म दे जाए, अब ना ऐसी खता
करे कोई, क्या भरोसा जवानी दावे का
काश दिल में वफा करे कोई।
नेक राहों पर सदा चलता रहे, मेरे हक में दुआ करें कोई।

आदर्श गोयल (कानपुर)

रे मन चले गाँव की ओर,
जन्म जहां पाया है मैंने,
मृत्यु वही मैं पाँऊ,
खींच रही उसी ओर मुझे,
मक्का बाजरे की रोटी,
महक आ रही है मुझे अब,
उपलों पर बनें सागो की,
कभी कभी लगता है ऐसा,
दौड़ दौड़ कर गाँव जाँऊ,
स्वाद चखूं जहाँ राब पक रही,
बार बार है चित्रित हो रहा,
आँखों में बचपन का ख्याल,
खुले खुले आकाश के नीचे,
उसी तरह घूँमू एक बार,
रे मन चले गाँव की ओर,
जहाँ जन्म पाया है मैंने,
मृत्यु वहीं मैं पाँऊ।

श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल जी
पूर्वी दिल्ली चैप्टर/सह चैप्टर रुद्रपुर

प्रकृति का श्रृंगार

प्रकृति का श्रृंगार है, कुदरत का उपहार है।
छाई बहार है, प्यारा संसार है।
भोर भई जब सूरज की, लालिमा सी चमकती है।
जैसा लगता धरती के, माथे पर बिंदिया सजती है।
रंग बिरंगे फूलों से, सजा ये सुन्दर संसार है।
जिसकी खुशबू से महका सबका द्वार–द्वार है।
बारिश की पहली बूंदे, धरती को जब चूमेंगी।
चारों ओर हरी हरियाली, खिल–खिल के झूमेंगी।
नदियों की नहीं सीमाएं, मस्त मगन सी बहती है।
धाराओं की शोक सराहे, जैसे कोई गीत सुनाती है।
पर्वत की ऊँचीं चोटी, छू पाता आसमान है।

एकल (बहनों) का अनुभव कथन

भाग – रामपुर
अंचल – रामपुर
संच – निरमंड
विद्यालय कोड – 1123312

मेरा विद्यालय जुलाई 2015 से चलता आ रहा है। मैं लगभग 6 वर्षों से कार्य कर रही हूं। मुझे इस संस्था से जुड़ कर बहुत अच्छा लगा। एकल विद्यालय से जुड़ने के बाद ही न सिर्फ मेरी शिक्षा पूरी हुई, बल्कि मैं इस काबिल हो पाई कि गांव के बच्चों को पढ़ा सकूं। आज मैं उन्हें पढ़ाने के साथ–साथ खुद भी पढ़ रही हूं। एकल विद्यालय के संचालन से बच्चों में शिक्षा के साथ–साथ संस्कार भी विकसित हो रहे हैं। जो बच्चे असामाजिक कार्य में लिप्त थे वे अब पढ़ाई करके कुछ बनना चाहते हैं। धन्यवाद

आपकी आचार्या – कामिनी शर्मा,
विद्यालय ग्राम –बंगला।

भाग – बिलासपुर
अंचल – सरकाघाट
संच – गोपालपुर
विद्यालय कोड – BHHP3012207

मैं एकल अभियान में 2019 से जुड़ी हूँ, एकल में काम करके बहुत अच्छा लग रहा है। इसमें हमें अच्छी जानकारियां प्राप्त हुई जैसे कोरोना महामारी से किस प्रकार से बचा जा सकता है। हमें आरोग्य प्रशिक्षण भी दिया गया जिसे हमनें गाँव के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाया। अपने विद्यालय में योग केंद्र चलाकर लोगों को योगा के लिए प्रेरित किया। हमारे विद्यालय ग्राम में एकल अभियान के प्रत्येक कार्य की बहुत सराहना की जा रही है। अतः अभियान से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में बहुत से बदलाव आए। धन्यवाद

आपकी आचार्या – अर्चना देवी
विद्यालय ग्राम – बडाल 2

प्रेरक कहानियां

श्री राम दरबार में हनुमान जी महाराज श्री रामजी की सेवा में इतने तन्मय हो गये कि गुरू वशिष्ठ के आने का उनको ध्यान ही नहीं रहा! सभी ने उठ कर उनका अभिवादन किया पर, हनुमान जी नहीं कर पाये। वशिष्ठ जी ने श्री रामजी से कहा कि राम गुरु का भरे दरबार में अभिवादन नहीं कर अपमान करने पर क्या सजा होनी चाहिए। श्री राम जी ने कहा गुरुवर आप ही बतायें।

वशिष्ठ जी ने कहाः मृत्यु दण्ड।

श्री राम जी ने कहाः स्वीकार है। तब श्री राम जी ने कहा कि गुरुदेव आप बतायें कि यह अपराध किसने किया है? बता दूंगा पर राम वो तुम्हारा इतना प्रिय है कि, तुम अपने आप को सजा दे दोगे पर उसको नहीं दे पाओगे। श्रीराम जी ने कहाः गुरुदेव, राम के लिये सब समान हैं। नहीं, राम! मुझे तुम्हारे ऊपर संशय नहीं है पर, मुझे दण्ड के परिपूर्ण होने पर संशय है।

अतः यदि तुम यह विश्वास दिलाते हो कि, तुम स्वयं उसे मृत्यु दण्ड अपने अमोघ बाण से दोगे तो ही मैं अपराधी का नाम और अपराध बताऊँगा । श्री राम जी ने पुनः अपना संकल्प व्यक्त कर दिया। तब वशिष्ठ जी ने बताया कि, यह अपराध हनुमान जी ने किया है। हनुमान जी ने भी स्वीकार कर लिया। तब दरबार में रामजी ने घोषणा की कि, कल सांय काल सरयु के तट पर, हनुमान जी को में स्वयं अपने अमोघ बाण से मृत्यु

दण्ड दूंगा। हनुमान जी के घर जाने पर उदासी की अवस्था में माता अंजनी ने देखा तो चकित रह गयी कि मेरा महावीर, अतुलित बल का स्वामी, ज्ञान का भण्डार, आज इस अवस्था में?

माता ने बार बार पुछाः पर जब हनुमान चुप रहें तो माता ने अपने दूध का वास्ता देकर पूछा। तब हनुमान जी ने बताया कि, यह प्रकरण हुआ है अनजाने में। माता! आप जानती हैं कि, हनुमान को संपूर्ण ब्रह्माण्ड में कोई नहीं मार सकता, पर भगवान श्रीराम के अमोघ बाण से भी कोई नहीं बच सकता तब माता ने कहा कि, हनुमान, मैंने भगवान शंकर से, राम नाम मंत्र प्राप्त किया था, और तुम्हें भी जन्म के साथ ही यह नाम घुटी में पिलाया।

जिसके प्रताप से तुमने बचपन में ही सूर्य को फल समझ मुख में ले लिया था, उस राम नाम के होते हुये हनुमान कोई भी तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकता। चाहे वो राम स्वयं भी हो। राम नाम की शक्ति के सामने राम की शक्ति और राम के अमोघ शक्तिबाण की शक्तियां महत्वहीन हो जायेंगी। जाओ मेरे लाल, अभी से सरयु के तट पर जाकर राम नाम का उच्चारण करना आरंभ कर दो।

माता के चरण छूकर हनुमान जी, सरयु किनारे राम राम रटने लगे।

सांयकाल, राम अपने सम्पूर्ण दरबार सहित सरयुतट आये। सबको कोतुहल था कि, क्या राम हनुमान को सजा देंगे?

पर जब श्री राम ने बार बार रामबाण, अपने महान शक्तिधारी, अमोघशक्ति बाण चलायें, पर हनुमान जी के ऊपर उनका कोई असर नहीं हुआ तो, गुरु वशिष्ठ जी ने शंका जताई कि, राम तुम अपनी पुर्ण निष्ठा से बाणों का प्रयोग कर रहे हो?

तब श्री राम ने कहा हाँ गुरूदेव मैं गुरु के प्रति अपराध की सजा देने को अपने बाण चला रहा हूँ, उसमें किसी भी प्रकार की चतुराई करके मैं कैसे वही अपराध कर सकता हूँ?

तो तुम्हारे बाण अपना कार्य क्यों नहीं कर रहे हैं? तब श्रीराम ने कहा, गुरुदेव हनुमान राम राम की अखण्ड रट लगाये हुये है।

मेरी शक्तियों का अस्तित्व राम नाम के प्रताप के समक्ष महत्वहीन हो रहा है। इससे मेरा कोई भी प्रयास सफल नहीं हो रहा है।

आप ही बतायेंः गुरु देव ! मैं क्या करुं?

गुरु देव ने कहाः हे राम! आज से मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे दरबार को त्याग कर, अपने आश्रम जा रहा हूँ। जहाँ राम नाम का निरंतर जप करूँगा।

जाते–जाते, गुरुदेव वशिष्ठ जी ने घोषणा की कि हे राम! मैं जानकर, मानकर, यह घोषणा कर रहा हूँ कि स्वयं राम से राम का नाम बड़ा है, राम नाम महा अमोघ शक्ति का सागर है।

जो कोई जपेगा, लिखेगा, मनन करेगा, उसकी लोक कामनापूर्ति होते हुये भी, वो मोक्ष का भागी होगा। मैंने सारे मंत्रों की शक्तियों को राम नाम के समक्ष न्युनतर माना है। तभी से राम से बड़ा राम का नाम माना जाता है। वो पत्थर भी तैर जाते हैं, जिन पर श्री राम का नाम लिखा रहता है।

प्रेरक संदेश .....

माननीय श्री श्याम जी गुप्त

प्रणेता,
एकल अभियान

रामायण में जिस माँ सीता का वर्णन है वह धरती की संतान मानी गई है और आज के परिपेक्ष्य में धरती की संतान अर्थात हमारे ग्रामवासी, माँ सीता के प्रतिनिधि है और जिस प्रकार माँ सीता उपेक्षित रहीं आज उसी प्रकार हमारा ग्रामवासी भी उपेक्षित है इसलिए हमारे ग्रामवासियों को सम्मानित करना, सशक्त करना यही भारत का भविष्य है यही भारत का भाग्य है । दुर्भाग्य से सारे राजनीतिक दलों व सारे धार्मिक संत महात्माओं ने इनकी उपेक्षा ही नहीं की बल्कि शोषण भी किया इसलिए इन ग्रामवासियों को पुनः सम्मानित, स्वाभिमानी बनाने के लिए एकल अभियान ने जन्म लिया है। मानो राम जी ने ही एकल अभियान को अवतरित किया हो, एकल अभियान के माध्यम से इन ग्रामवासियों को स्वाभिमानी बनाएंगे यह हमारा संकल्प है ।

प्रो. मंजू श्रीवास्तव

एकल अभियान, संगठन प्रभारी
एवं प्रधान, एकल संस्थान

हम सबकी प्रेरणा स्रोत प्रो. मंजू श्रीवास्तव (मंजू दीदी) ने अपना सम्पूर्ण जीवन एकल को समर्पित कर दिया। कई वर्षों से आपका योगदान एकल अभियान को प्राप्त होता रहा है। महिला समिति के लिए सदैव आप एक प्रेरणा स्रोत रहीं हैं। आपके जीवन से हमें ऊर्जा मिलती है और आपका मार्गदर्शन हमें सेवा के लिए सदैव प्रेरित करता रहता है।

संपादक की कलम से.....

माधुरी अग्रवाल

उपप्रधान, राष्ट्रीय महिला समिति

एकल भारत लोक शिक्षा परिषद् चैप्टर की सभी महिला समितियों के समर्पित भाव से सेवारत होकर कार्य करने के लिए साधुवाद। एकल अभियान समाज के ग्रामीण एवं आदिवासी परिवारों को पंचमुखी शिक्षा के माध्यम से जोड़ रहा है। एकल भारत लोक शिक्षा परिषद् की केन्द्रीय महिला समिति अपने प्रयास से ग्राम और शहर के मध्य समन्वय का कार्य कर रही हैं। प्रत्येक सेवा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए सेवाभाव से जुड़ी रही है तथा कोरोना काल के इस दौर में केन्द्रीय महिला समिति द्वारा ग्रामीण लोगों से लगातार संपर्क व सेवाओ को प्रदान किया गया है जिसकी मैं दिल सराहना करती हूँ।

कोरोना काल में चैप्टर द्वारा किया गया कार्य

Sponsor 1 student – 1 Year – Rs. 1000/-
Sponsor 1 Village – 1 Year – Rs. 22000/-

Donate online

Online payment through *Website* - *www.blspindia.org*
Through Debit Card/ Credit Card

Donate Now

Paytm online through website - *Paytm QR code*

Pay online through *NEFT/RTGS*

Bank Name: Union bank of India,Branch : Shalimar Bagh, Delhi, **Account Name**: Bharat Lok Shiksha Parishad , **A/C NO.** 467902050000186, **IFSC code:** UBIN0546798

Crowd Funding Donation Link : https://rb.gy/jka5pj-

Follow us on

एकल अभियान से जुड़ने के लिए हमारी वेबसाइट www.blspindia.org पर सम्पर्क करें
एकल विद्यालय में सीधे दान हेतु सम्पर्क करें

Bharat Lok Shiksha Parishad
A/C No: 467902050000186, Union Bank of India, IFSC Code : UBIN 0546798

प्रकाशक : एकल भारत लोक शिक्षा परिषद्
मुख्य संपादक : श्रीमती माधुरी अग्रवाल, उपप्रधान, राष्ट्रीय महिला समिति
दूरभाष : 011–47523879, 42478184, 9999399063
जी आई–17, जी.टी. करनाल रोड, इण्डस्ट्रीयल एरिया, आजादपुर, दिल्ली–110033
Email : media@blspindia.org, administration@blspindia.org
Website : www.blspindia.org